शार्टकट से बचें, जॉब क्रिएटर बनें : प्रणब मुखर्जी

» आईआईएम, रांची की 10वीं वर्षगांठ पर स्टूडेंट्स से रूबरू हुए पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी

ranchi@inext.co.in

RANCHI (15 Dec) : पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने स्टूडेंट्स से कहा कि वे जॉब क्रिएटर बनें. परिश्रम के लिए शार्टकट रास्ता नहीं होता, परिश्रम से सफलता हासिल करें. उन्होंने यह भी कहा कि मेरा मानना है कि किसी में लीडरशिप का गुण जन्मजात नहीं होता, बल्कि उसमें ऐसे गुण लाए जाते हैं. किसी की प्रतिभा को सही आकार देकर उनके अंदर की चमक को बाहर निकाला जाता है और इसमें आइआइएम का बड़ा योगदान है. उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि सामाजिक स्थिति को सुधारने वाला होना चाहिए. पूर्व राष्ट्रपति शनिवार को रांची में

आईआईएम की दसवीं वर्षगांठ पर छात्रों और सभागार में मौजूद लोगों से रूबरू थे.

प्राथमिक शिक्षा पर हो जोर

पूर्व राष्ट्रपति ने कहा कि देश में शिक्षण संस्थानों की कमी नहीं है, लेकिन इसमें गुणवत्ता की कमी है. आजादी के बाद अनेक संस्थान खुले लेकिन गुणवत्ता पर ध्यान नही दिया गया. रिसर्च में कमी दिखी. उन्होंने कहा कि प्राथमिक शिक्षा से ही क्वालिटी पर ध्यान देने की जरुरत है. उन्होंने कहा कि 1930 में सीवी रमण को नोबेल पुरस्कार मिला. इसके बाद तीन और भारतीय को नोबेल पुरस्कार मिला, लेकिन स्नातक के बाद रिसर्च के लिए उन्हें देश से बाहर जाना पड़ा. उन्होंने कहा हर वर्ष एक बड़ी संख्या में विद्यार्थी उच्च शिक्षा के लिए देश से बाहर चले जाते हैं. जबकि नालंदा और विक्रमशिला जैसे यूनिवर्सिटी विश्व में लीडिंग यूनिवर्सिटी रहे थे. उन्होने कहा कि हम रिसर्च, इनोवेशन और टोटल डेवलेपमेंट आफ फैकल्टी आफ स्टूडेंट्स पर ध्यान दें.

पूर्वोत्तर में काफी संभावनाएं

पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने कहा कि दूसरी हरित क्रांति की शुरुआत पूर्वोतर क्षेत्र से हो सकती है. क्योंकि इसके लिए इस क्षेत्र में पर्याप्त संभावनाएं हैं. नदी, जंगल, जमीन हैं. पूर्वोतर भारत के लगभग क्षेत्र कृषि के लिए उपयुक्त हैं. साथ ही इस क्षेत्र में इन्वेस्टमेंट के लिए भी उचित माहौल है. इसके लिए केंद्र व राज्य सरकार प्रयासरत हैं. उन्होंने कहा कि एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2035 तक पूर्वोतर राज्यों का कुल जीडीपी में 25 प्रतिशत का योगदान होगा. पूर्व राष्ट्रपति ने कहा कि आजादी के समय देश की जीडीपी 1 प्रतिशत थी. इसके बाद 7 प्रतिशत से अधिक रही. यदि जीडीपी 8-10 प्रतिशत होती तो भूखमरी, गरीबी, बीमारी जैसी समस्या से निजात मिल जाती. समारोह में शैक्षणिक उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 13 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया. मौके पर आईआईएम के निदेशक डॉ. शैलेंद्र सिंह, चेयरमैन पीके पांडया सहित सभी विद्यार्थी व फैकल्टी थे.

iNext, 16.12.2018, Pg. 1